स्नातकोत्तर
समसत्र-4

रेखाचित्र

अभिप्राय, स्वरूप एवं विशेषताएं-

-डॉ० यशोधरा राठौर

रेखाचित्र हिंदी साहित्य की अद्यतन गद्य विधा है , जिसकी स्वीकृति गद्य विधा के अंतर्गत द्विवेदी युग एवं परवर्ती रचनाकारों में स्पष्ट दिखाई पड़ती है। रेखाचित्र के अंतर्गत व्यक्तित्व को स्थिरता के साथ समग्र रूप में देखने की चेष्टा होती है । आकृति का भेद करते हुए उसका बारीक अंकन करना। 'रेखाचित्र' का मुख्य उद्देश्य है साधारण से साधारण पात्रों का अंकन भी उतने ही प्रभाव से करना है, जितना की विशिष्ट या विख्यात चरित्रों का। अपनी प्रकृति में रेखाचित्र किसी सीमा तक संस्मरण हो सकता है। वस्तुतः रेखाचित्र और संस्मरण के बीच की विभाजक रेखा बहुत ही सूक्ष्म होती है। प्राय : इनके रूप परस्पर अंतरभुक्त दिखाई देते हैं। परंतु ,रेखाचित्र की खासियत यह होती है कि इसकी वृत्ति स्थिर होती है , जिसके कारण इसका क्षेत्र भी सीमित होता है। मानव व्यक्तित्व के सूक्ष्म अन्वेषण में इसकी पहुंच अपेक्षाकृत अधिक होती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता पारंपरिक नायक को हटाकर सामान्य से सामान्य व्यक्तित्व की स्थापना करना है। छायावादी युग में ऐसा पहली बार हुआ जब कवि निराला का 'कुकुरमुत्ता' 'गुलाब' को ललकारता और उस पर हावी नजर आता है। इसी प्रकार 'होरी, जैसा दीनहीन किसान 'गोदान' जैसे उपन्यास का नायक बन जाता है और नायक की परंपरागपत धारणा को ही बदल देता है इसका ज्वलंत और पुष्ट प्रमाण महादेवी वर्मा

के रेखाचित्र है ,जहां नायक की इस बदली हुई धारणा के प्रमाण मिलते हैं । काल्पनिक वृत्त के लिए गद्य में सृजनात्मक भाषा का प्रयोग महीयसी महादेवी वर्मा ने काफी पहले प्रारंभ कर दिया था और इस क्षेत्र में उनकी सफलता शीर्ष पर है ,,यूं कहें कि अतुलनीय है । उनके रेखा चित्रों की भाषा में शब्दों का ठोस प्रयोग छायावादी कविता के काव्य विधान से अलग दिखता है कविता और गद्य के भाषिक उद्देश्यों के बीच का अंतर यहां बहुत साफ साफ देखा जा सकता है। महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों की खासियत यह है कि इसमें एक और बाहरी तथ्यों का सूक्ष्म अंकन है, तो दूसरी ओर करुणा और सहानुभूति के अंतर्रवरती तत्व भी बराबर घुले मिले दिखाई देते हैं ।सबसे बड़ी बात यह है की करुणा और सहानुभूति के वातावरण में लेखिका विनोद के भाव बी बड़े उपयुक्त तरीके से उभारे हैं जिसके कारण रेखा चित्रों की सजीवता और विश्वसनीयता और बढ़ जाती है। मीता या चीनी फेरीवाला ,यामा के रेखाचित्र मानववाद , सहानुभूति और विनोद के भावों की पारस्परिक क्रिया- प्रतिक्रिया के कारण आपस में एक संपूर्ण सृष्टि के उदाहरण है । इन रेखाचित्रों की खासियत है कि उसमें सहज और निर्मल गद्द स्वत: एक विशिष्ट उपलब्धि बनकर दिखाई देते हैं ।यहां यह उल्लेखनीय है कि महादेवी वर्मा का गद्द पहली बार काव्य रूपों से ऊपर उठकर सर्जनात्मक लेखन की तरह दिखाई देता है जो आधुनिक काल को गद्यकाल कहे जाने का साक्ष्य प्रस्तुत करता है। सन 1941 में रचित अतीत के चलचित्र 1943 में स्मृति की रेखाएं अपने विधान में पूर्ण रेखा चित्र माने जा सकते हैं, बल्कि हिंदी के और काल्पनिक गद्य के यह श्रेष्ठ उदाहरण भी हैं जहां भावुकता की जगह विनोद के भाव हैं और यथार्थवाद की जगह मानव व्यक्तित्व की गहरी निष्ठा है और कल्पना की जगह सृजनात्मकता है। रेखाचित्र के आवश्यक तत्वों को पूरे अनुपात में प्रयोग करने के लिए महादेवी वर्मा की कला सदैव रेखांकित की जाएगी। घीसा ,यामा ,बूढ़ी भक्ति ,चीनी फेरीवाला जैसे रेखाचित्र महादेवी वर्मा के आत्मविश्वास का सूचक है ।

पथ के साथी 1956 समकालीन लेखकों के संस्मरण आत्मक चित्रों का संकलन है जिसमें पशु पक्षियों के भी चित्रों को भी उकेरा गया ह बिना कल्पना और कभी रूपों का सहारा लिए कोई गद्य में इतना अर्जित कर सकता है यह केवल महादेवी वर्मा को पढ़कर समझा जा सकता है ।हिंदी रेखाचित्र लेखन में बनारसीदास चतुर्वेदी और उनका गद्य प्रयोग भी महत्वपूर्ण है शिकार साहित्य के प्रसिद्ध लेखक श्री रामशर्मा के रेखाचित्रों को की भी अपनी खास विशेषता है ।बोलती प्रतिमाला सन 1937 में संकलित रेखाचित्र सहानुभूति, आत्मीयता के साथ देसी जीवन को अभिव्यक्त करता है। प्रभावशीलता के लिए उनके गद्य को अलग से पहचान मिली।

सन् 1937 में श्रीराम शर्मा जी की 'बोलती प्रतिमा' में संकलित रेखा चित्र सहानुभूति और आत्मीयता के साथ देसी जीवन को बखूबी अभिव्यंजित करते हैं, जो अन्यत्र कहीं नहीं मिल सकता ।अपनी तद्भवता और प्रभावशीलता के लिए श्रीराम शर्मा जी का गद्य अलग ही पहचान बनाता है।

श्री विनय मोहन शर्मा ने 'रेखाचित्र' के माध्यम से गद्य की गंभीरता को निष्ठा प्रदान की। आलोचक होने के नाते उन्होंने रेखाचित्र के सैद्धांतिक पक्षों पर विचार किया । सन् 1955 में 'रेखा और रंग' चित्र दैनिक जीवन के अनेक पक्षों को प्रस्तुत करते हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं।

इसी प्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी की रेखा चित्रों की शैली जीवंत और स्फूर्ति दायक है। उनकी शैली का विशेष रूप बहुत कुछ तत्कालीन स्वाधीनता संग्राम की मन:स्थिति से प्रेरित दिखाई देता है ,जो उनकी भावुकता के साथ मिलकर कई लेखकों में एक साथ दिखाई देता है परंतु

,उनकी उदबोधन- परखता वाली शैली अतिरंजन संयुक्त कई बार आरोपित जान पड़ती है, इसलिए वह अर्थशक्ति के गहरे स्तरों को समृद्ध नहीं कर पाती । वस्तुतः बेनीपुरी की शैली युग विशेष के स्मारक के रूप में ही हमारे सामने आती है। सन् 1946 में प्रकाशित 'माटी की मूर्ति' और सन 1950 में प्रकाशित 'गेहूं और गुलाब' बेनीपुरी के समद्ध रेखा चित्र के संकलन है ।इस प्रकार हम पाते हैं कि हिंदी गद्य विधा की समृद्धि एवं विकास में 'रेखाचित्र' सदैव ही अलग स्थान रखते हुए इसकी समृद्धि में सहायक रही है।